ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

‘भीष्म साहनी’ के कथा साहित्य में मानव जीवन

प्रवीन कुमारी
शोध छात्रा,
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान,
हिन्दी प्रचार सभा,
मद्रास, चैन्नई

सारांश

भीष्म साहनी के कथा साहित्य में मानव मनोविज्ञान, परम्परागत नैतिक आदर्शों की खोज, युगीन मूल्योग की संक्रमणशील स्थितियाँ, साम्प्रदायिकता से जन्मी विसंगतियाँ और व्यापक मानव व्यथा वर्णित की गई है। उनका सम्पूर्ण साहित्य परिवेश की सार्थक अभिव्यक्ति करनेके साथ मानवीय सरोकारों और उत्तरदायित्त्वों का जीवंत दस्तावेज है। साहनी जी का कथा साहित्य समकालीन चेतना के विविध आयामों को सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान करता है। भीष्म साहनी के कथा साहित्य में विन्यस्त सृजनात्मक प्रेरणाओं के विवेचन से निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उनका कथा सृजन किन्ही आयतित विचारों और रचनाओं से प्रभावित नहीं है। समकालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों ने उनके लेखन को प्रभावित किया है। भीष्म साहनी रचना के स्तर पर प्रमुख विचारधाराओं से भी प्रभावित किया है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भीष्म साहनी का कथा साहित्य अपने युग और मानव जीवन को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करने का सार्थक रचनात्मक प्रयास लें।

मुख्य शब्द : मानव, जीवन, कथा साहित्य, उद्देश्य।

प्रस्तावना

मानव जीवन जिसे मनुष्य को विधाता का दिया हुआ सर्वोत्म उपहार कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। क्योंकि कोई व्यक्ति तभी महान बनता है ज बवह अपनी महानता के चरम पर पहुंचने तक जीवित रहे। वह एक घंटे या एक दिन में महान नहीं बन सकता क्योंकि महानता वह कसौटी है जिस पर महान व्यक्ति हर सम–विषम परिस्थितियों में स्वयं को खरा उतारता है। अर्थात जीवन ही ही मनुष्य को महान बनाने का अवसर प्रदान करता है, लेकिन जीवन का लाभ वहीं उठा पाते है जो इसके उद्देश्य को पहचानते है। बिना उद्देश्य के हम किस मार्ग पर चलेंगें कहना कठिन है। अतः मानव जीवन के दो उद्देश्य सामने आते है :–

1. अपना अस्तित्व बनांए रखने के लिए संघर्ष
2. सुख प्राप्त करने के लिए संघर्ष

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य ‘भीष्म साहनी’ के कथा साहित्य में मानव जीवन के विविध आयामों का अध्ययन करना है।

भीष्म साहनी के कत्थयात्मक लेखन में मानव जीवन के विभिन्न रूप

1953 में प्रकाशित ‘भाग्यरेखा’ नामक कहानी संग्रह में चौदह कहानियाँ हैं। ‘जीत’ कहानी में लालफीताशाही और भ्रष्टाचार पूरी की साफगोई से चित्रित है। शोषण की प्रक्रिया किस प्रकार से समाज में रह रहे व्यक्तियों को प्रभावित करती है– यह इस कहानी का विषय है। ‘अशान्त लम्हें’ कहानी में मानव के अपराध–बोध का मनावैज्ञानिक चित्रण किया गया है। ‘शिष्टाचार’ में भीष्म ने उच्चवर्गीय लोगों द्वारा निन्तवर्गीय लोगों के प्रति उनके दृष्टिकोण को उभारा है। ‘अनोखी हड्डी’ लोककथा पर आधारित कहानी है, जिसके माध्यम से वे लगातार बढ़ती ही जाती है। ‘तमगे’ कहानी में वीरता प्रदर्शित करने वाले फौजियों के कथानक को लेकर माँ की ममता का सूक्ष्म चित्रण किया है। ‘क्रिकेट मैच’ में भीष्म साहनी ने ऐसे व्यक्तित्त्व को उभारा है, जिसकी वाहय वेश–भूषा उसके चरित्र के अनुकूल नहीं होती है। वेश–भूषा में असली व्यक्ति छटपटाता हुआ नजर आता है। ‘मुर्गी की कीमत’ में भ्रष्टाचार और निम्नवर्गीय लोगों के होने वाले शोषण का चित्रण किया है। ‘नीली आँखों’ में सभ्य कहलाने वाले भद्रजनों के संकीर्ण एवं गिरे हुए विचारों और भावनाअें को वर्णन है। ‘ऊब’ में एक की ढर्रे पर चली आ रही जिन्दगी से पैदा होने वाली ऊब की कथा है। ‘गंगो की जाया’ कहानी सामाजिक और आर्थिक विसंगति को इंगित करती है। ‘भाग्य रेखा’

सर्वहारा के संघर्ष और संघर्ष से स्थितियों में सुधार की आशाओं को फलीभूत करती है। 'घर–बेघर– में खानाबदोश की तरह जीवन व्यतीत करने वाले लोगों को और 'खून के छींटे' में टूटते हुए मानवीय संबंधों को भीष्म ने उजागर किया है। 'घर की इज्जत' में मानवीय स्वभाव और चरित्र के दोहरेपन एवं खोखली मर्यादा का ढोग रचने वालों को चित्रित किया गया है।

'पहला पाठ' भीष्म साहनी की कहानी यात्रा का दूसरा कहानी संकलन है। यह कहानी संग्रह सन् 1957 में प्रकाशित हुआ था। इस कहानी संग्रह में कुल 15 कहानियाँ शामिल हैं। भीष्म साहनी की पहचान कहानी 'चीफ की दावत' से हुई थी। वह इसी संग्रह की प्रथम कहानी है। इस कहानी में मध्य वर्गीय जीवन के अन्तर्विरोधों को बड़ी सूक्ष्मतापूर्वक उद्घटित किया है। मध्यवर्गीय जीवन का जो यथार्थ आजादी के बाद विकसित हुआ, उससे इस वर्ग की जीवन स्थितिश्यॉए आन्तरिक और वाह्य स्थितयों, विसंगतियों, जीवनगत वास्तविकताओं में व्यापक बदलाव आया है। 'चीफ की दावत' कहानी का मूल स्वर इसी बिडम्बना को उद्घाटित करती है। यह कहानी जीवन से जुड़े अन्तर्विरोधों से शुरू होती है। जिसमें नए रिश्ते बनते चले आ रहे सामाजिक सम्बन्ध तेजी से टूटते भी हैं। यही स्थिति इस संग्रह की अन्य कहानियों की है। भाई बंद, प्रणयलीला, पहला पाठ, समाधि, बाप–बेटा, पाप–पुण्य ऐसी की कहानियाँ हैं।

हिन्दी कथा साहित्य में भीष्म साहनी का नाम प्रतिमान के रूप में स्थापित हो चुका है। प्रतिमान बन जाने तक उनकी कथा–यात्रा अनेक पड़ावों और संघर्षों से गुजरी है। उनके पास विशिष्ट प्रकार की जीवन दृष्टि है जो उनके साहित्य में व्यक्त होती है। इस जीवन–दृष्टि के माध्यम से सामाजिक यथार्थ के जटिल स्तरों को कलात्मक ढ़ंग से चित्रित करते हैं। उनकी कला गहरे अर्थों में मानवीय सम्बन्धों की त्रासदी और उनके भविष्य के विभिन्न रूप से जुड़ी है।

इस क्रम में 'भटकती यात्रा' (1966) का उल्लेख होता है। यह संग्रह बहुचर्चित और महत्त्वपूर्ण है। इस संग्रह की कहानियाँ वर्तमान की समस्याओं का समाधान अतीत में देखने की कोशिश का विरोध करती हैं। ये कहानियाँ निरन्तर प्रवाहित होने वाली जीवन धारा और इतिहास धारा का जीवंत हिस्सा बन जाती हैं। मनुष्य के इतिहास में यह रुचि किसी वायवीय आनन्दलोक की सृष्टि नहीं करतीं। संघर्षशील, शोषित अभाव ग्रस्त, शोषण के अंधकार में भटकते लोगों से हमारा आत्मीय साक्षात्कार कराती हैं। 'यादें' और गीता सहस्त्र नाम' में बूढ़ी महिलाओं की दयनीय हालत को बहुत ही मार्मिकता के साथ अंकित किया गया है। 'अपने–अपने बच्चे' सामाजिक विषमता से उत्पन्न मानवीय संकट का यथार्थ–परक अंकन करने वाली कहानी है। 'भटकती राख' के पात्र मानवीय संघर्ष की जीवंत तस्वीर हैं। 'पटरियाँ' में संकलित कहानियाँ कला की सामाजिक प्रतिबद्धता को स्थापित करने वाली कहानियाँ हैं। इस कहानी संग्रह में भीष्म साहनी की चौदह कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों की सोद्देश्यता पाठक को प्रभावित करती है। इनमें करुणा, व्यंग्य एवं अंतरंगता है, निष्कर्ष रूप में कहें तो मानवीयता से ओत–प्रोत हैं। जीवन की विषमताओं से जूझते हुए लोगों का मर्मस्पर्शी चित्रण लेखक करता है। इस संग्रह की सर्वाधिक चर्चित कहानी 'अमृतसर आ गया है' में वेश्या जीवन के यथार्थ का चित्रण है। 'पैरों के निशान' और 'इन्द्रजाल' मनुष्य के हृदय में कसमसाती जिजीविषा मिलती है। 'पटरियाँ' में हीन–भावना से ग्रस्त मध्यवर्गीय व्यक्ति की धपपटाहट का चित्रण है। 'नया मकान' में एक तथाकथित क्रांतिकारी की मनःस्थिति का मर्मस्पर्शी चित्रण है। 'ललक' बचपन के अभावों में पैदा होने वाले वैमनस्य की कहानी है। इसी तरह 'मौकापरस्त' में आज की राजनीति पर करारा व्यंग्य है। यहाँ मानवीय संवेदनाओं की जगह व्यक्ति की मृत्यु से राजनीतिक लाभ उठाने की चेष्टा का उल्लेख कहानीकार करता जाता है।

'वांडचू' में संकलित भीष्म साहनी की कहानियाँ सोद्देश्य निर्वहनए हृदयग्राही उन्तरंग वर्णन के लिए चर्चित रही हैं। ये कहानियाँ व्यापक सामाजिक परिप्रक्ष्य में लिखी गई हैं। जीवन सन्दर्भों के चयन में विविधता मिलती है। 'वाडचू' कहानी में विस्थापित चीनी मानस की निरीहता का चित्रण है। 'राधा–अनुराधा' में अभावों और यातनाओं में पली निन्नवर्गीय किशोर नायिका के रोमांस की करुणा कहानी है। 'ओ हरामजादे' कहानी में प्रवासी भारतीय के मन की पीड़ा का वर्णन है। 'सागमीट' और 'त्रास' कहानियाँ वर्ग विभाजित समाज मं पनपती अमानवीयता और उस तर्कहीन घृणा का चित्र प्रस्तुत करती हैं। उच्चवर्ग के लोगों के मन में, निम्न वर्ग के लोगों के लिए द्वेष और घृणा रहती है। 'खण्डहर' कहानी में लेखक अतीत की सभ्यता के खण्डहर और पारिवारिक जीवन के खंडहरों की तुलना लेखक करता है। 'अहं ब्रह्मास्मि' कहानी गहरे मानव मूल्यों की पड़ताल करने वाली कहानी है। वायवीय, अमूर्त आध्यात्मिक होना बेहतर है या ठोस और सार्थक उद्देश्य को आत्मसात् करना अच्छा है यह प्रश्न इस कहानी में उठाया गया है। 'मालिक का बन्दा' कहानी के पात्र मानव–मूल्यों से कटे लेकिन धर्म में श्रृद्धा रखने वाले व्यक्ति हैं, मूल्यों से कटे हुए कवि हैं।

भीष्म साहनी के संकलन 'शोभायात्रा' की कहानी 'फैसला' के जब शुक्ला जी हों या 'रामचन्दानी' के रिटायर्ड अफसर रामचन्दानी हों–सही आदमी के लिए इस व्यवस्था में जीवित रह पाना कठिन, अपमानजन और उपहार का विषय बन चुका है। 'निमित्त' कहानी में भाग्य और भगवान को पूज्य मानने वाले पात्रों की क्रूरता और चालाकियों का खुलासा हुआ है। 'शोभायात्रा' और 'सत्ता' जैसी कहानियाँ 'अहिंसा परमो धर्म' वाले ढोंग को उघड़ती है। 'खिलौने' में बच्चों और खिलौनों के माध्यम से आधुनिक जीवन पद्यति और पुरानी परम्पराओं को छोड़ पाश्चात्य संस्कृतिए सभ्यता और वस्तुओं के मोह–जाल में फंसे व्यक्तियों को 'मेड इन इटली' कहानी में सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया है। 'भटकाव' में यौवनवस्था में कदम रखते हुए युवक–युवतियों के भटकाव, दूसरे के प्रति आकर्षण भाव का सूक्ष्म चित्रण किया गया है। 'लीला नन्दलाल की' कहानी में भ्रष्टाचार और सामान्यजन की व्यर्थता अस्तित्वहीनता का अंकन करते हुए कानून की पेचीदगियों में फंसे आदमी की पीड़ा, व्यथा, तड़प का चित्रण मिलता है।

'निशाचर' भीष्म साहनी की चौदह कहानियों का बहुचर्चित संग्रह है। की कहानियाँ मानवीय संबंधों के बदलते–बिगड़ते रूपों को पूरी आत्मीयता के साथ उभारती हैं। भीष्मजी के पास एक साफ–सुखरी जीवन–दृष्टि है, जो उनके अनुभवों को तार्किक परिणति प्रदान करती है। पाठकों प्रभावित करने वाली शैली और इन कहानियों के पात्र परिस्थितियों से आक्रान्त होकर काल्पनिक दुनियाँसे पलायन नहीं करते है। वे जिन्दगी की कड़वाहट भरे यथार्थ से कर चुप्पी नहीं साध लेते, बल्कि उन स्थितियों से टकराने का संदेश देते हैं। व्यक्तियों और सामाजिक शक्तियों से निकटता और सक्रिय रिश्ता कायम करते हैं। इस संग्रह की 'निशाचर' निम्नवर्गीय जनों की मार्मिक करूणा गाथा है। 'चाचा मंगलसेन' जिन्दगी की ठोकरें आम आदमी की कहानी हैं। बदहाली में भी जीवन के प्रति सच्ची आस्था रखने वाले लोगों का चित्रण इस कहानी में हुआ है। भीष्म जी लेखन करते समय बहुत ज्यादा पेशेन्स रखते है और वे हमेशा गलतीयों को हाथ से फेयर करने में विश्वास रखते है जिसका एक फायदा है कि नई बातें सूझ जाती है जो पहले याद ना आई हो।

निष्कर्ष

'कंठहार' में अपंग और लाचार बच्ची के प्रति माँ के प्यार का मानवीय चित्रण है तो 'संभल के बाबू' में सर्वहारा मजदूर वर्ग की परिवर्तित स्थितियों का चित्रण है। 'मुर्ग–मुसल्लम' कहानी में आज की गंदी राजनीति और अवैद्य राजनैतिक गतिविधियों का पर्दाफाश किया है। लेखक ने स्पष्ट किया है कि कुछ राजनैतिक व्यक्ति एक दूसरे के विरुद्ध आरोप प्रत्यारोपण की राजनीति करते हैं। 'दिवास्वप्न' में रचनाकार द्वारा अपनी पहचान बनाने की छटपटाहट और कसक को चित्रित किया गया है। वह बार–बार स्वप्न में अपने आपको प्रतिष्ठित लेखक के रूप में देखता है। 'जहूरबख्श' और 'सरदारनी' जैसी कहानियाँ साम्प्रदायिकता को उजागर करने वाली निमर्म करुण–कथाऐं हैं। 'विकल्प' कहानी में परिवर्तित हो रहे सामाजिक–नैतिक मूल्यों से प्रभावित वैवाहिक जीवन के समक्ष उत्पन्न खतरों का वर्णन है। 'पोखर' कहानी मनुष्य की वास्तविक स्थिति का चित्रण करती है जो पोखर रूपी इस दुनियाँ में जीव–जन्तुओं की तरह जी रहे हैं। 'नादान' खेल–भावना के अभावों को चित्रित करने वाली कहानी है। 'अतीत के स्वर' में संस्कृति के खंडित स्वरूप का चित्रण है तो 'दहलीज' में टूटती–बिखरती दुनियाँ और उसके विषाक्त वातावरण का सूक्ष्म अंकन है। इसलिए प्रसिद्ध कथाकार अमृतराय ने भीष्म जी के साहित्य के सम्बन्ध में टिप्पणी की थी–भीष्म साहनी उत्कृष्ट साहित्यकार हैं, उनकी स्वभावगत ईमानदारी उनके लेखन की अनुभति, परिणाम, गंभीर तत्त्व हैं उनकी रचना बहुत समय तक अंतस में घुमड़ती रहती है, और जब पककर तैयार होती है तब उसे भुलाया नहीं जा सकता। भीष्म साहनी आवेग को अनुभव की भट्टी में तपाकर उसे खरा सोना बनाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भीष्म साहनी का कथा साहित्य –पृष्ठ 24–27*
2. *मेरी प्रिय कहानियां – 13–21*
3. *लेखक कौशल शुक्ला के लेख से उद्धृत*
4. *डॉ0 धनजय वर्मा : समकालीन कहानी दिशा और दृष्टि पृ0 110*
5. *राजेश्वर सकसेना और प्रताप ठाकुर :– भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना पृ 69*